रिमझिम-2

दूसरी कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

यह किताब .... की है।

NDCampus

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

0217 – रिमझिम
दूसरी कक्षा के लिए पाठ्यपुस्तक

ISBN 81-7450-673-X

प्रथम संस्करण
फरवरी 2007 माघ 1928

पुर्नमुद्रण
नवंबर 2007 कार्तिक 1929
जनवरी 2009 पौष 1930
जनवरी 2010 पौष 1931
जनवरी 2011 माघ 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
दिसंबर 2012 अग्रहायण 1934
अक्तूबर 2013 अग्रहायण 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
फ़रवरी 2017 माघ 1938
दिसंबर 2017 पौष 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
सितंबर 2019 भाद्रपद 1941
जनवरी 2021 पौष 1942

PD 150T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् , 2007

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा देवटैक पब्लिशर्स एवं प्रिंटर्स प्रा. लि., 14/3 बोलटान कम्पाउंड, मथुरा रोड, .फरीदाबाद पिनकोड – 121 003 (हरियाणा) द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

न.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108ए 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी)	:	*विपिन दिवान*
सहायक संपादक	:	*मरियम बारा*
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	*मुकेश गौड़*

आवरण और सज्जा
ब्लू फिश

चित्रांकन
अनिल चैत्या वांगड़, जोयल गिल, निधि वाधवा, राधा-रमेश टेकाम, रंजीत बालुमुचु, संजीत कुमार पासवान

NBCampus

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती

है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् प्राथमिक पाठ्यपुस्तक सलाहकार समूह की अध्यक्ष प्रोफ़ेसर अनीता रामपाल और हिंदी पाठ्यपुस्तक समिति की मुख्य सलाहकार, डॉ. मुकुल प्रियदर्शिनी की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

बड़ों से दो बातें

रिमझिम श्रृंखला के अंतर्गत दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक **रिमझिम 2** आपके सामने है। **रिमझिम 1** की तरह यह किताब भी केवल एक पाठ्यपुस्तक ही नहीं बल्कि बच्चों के साथ मिलकर कविता गाने, कहानी सुनने-सुनाने, भाषा के रोचक खेल खेलने का एक ज़रिया भी है। किताब में इस बात के संकेत भी मिलते हैं कि बच्चों से बातचीत करने के लिए, उन्हें स्वयं सोचकर कुछ कहने, पढ़ने-लिखने के लिए, बेझिझक होकर स्वयं को अभिव्यक्त करने का आत्मविश्वास पैदा करने के लिए घर और स्कूल में कितने ही अवसर ढूँढ़े जा सकते हैं। दुनिया को समझने के लिए भाषा एक बढ़िया औज़ार का काम देती है। इसलिए ज़रूरी है कि हम दुनिया को बच्चों की निगाह से देखें और बच्चों के जीवन में भाषा के महत्त्व को समझें। इस पाठ्यपुस्तक में दूसरी कक्षा के बच्चों की रुचि को ध्यान में रखते हुए पाठ्यसामग्री तथा अभ्यास एवं गतिविधियाँ दी गई हैं। इस पाठ्यपुस्तक का उपयोग करते समय कुछ महत्त्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखा जाए तो बच्चे के लिए भाषा सीखना एक सुखद अनुभव बन सकेगा।

- भाषा के अपने कुछ नियम होते हैं। बच्चों की भाषा इस बात का प्रमाण है कि वे इन **नियमों का प्रयोग** करते हैं भले ही वे इन नियमों को बता न पाएँ। यदि परिवेश में बोली जाने वाली भाषा सुनकर बच्चे बोलना सीख जाते हैं तो समृद्ध परिवेश मिलने पर बच्चे पढ़ना-लिखना भी सीख सकते हैं। लिखित भाषा का भरपूर परिवेश यदि स्कूल में बनाया जाए तो स्वत: ही पढ़ने और लिखने की क्षमता का विकास करने में बच्चों को सहायता मिलेगी।

- भाषा प्रयोगों से ही परिष्कृत होती है और इस पुस्तक में तो बच्चों के लिए इस तरह का वातावरण ही उपलब्ध किया गया है कि बच्चे संवाद स्थापित कर सकें। वह भाषा सीखने के दौरान रटी-रटाई वर्णमाला के आवरण से निकलकर स्कूल की दुनिया से बाहर की भी गतिविधियों से अपने आप को जोड़ सकें। बच्चे ऐसा करके न सिर्फ़ आनंदित होंगे बल्कि उत्साह से

NCERT Campus

संवादों का आदान–प्रदान भी करेंगे। उनके कौतुहल को शब्द दे पाना एक शिक्षक के लिए बच्चों से बातें करने और उनसे जुड़ने का एक सुनहरा अवसर होता है। संवाद का यह सिलसिला बच्चों की जिज्ञासाओं के शमन के साथ उनमें अभिव्यक्ति का आत्मविश्वास भी भर देता है।

- इस पुस्तक में बाल–साहित्य भरपूर मात्रा में दिया गया है ताकि बच्चों का पढ़ने–लिखने के प्रति रुझान बढ़ सके। अच्छी रचनाएँ बच्चों के लिए न केवल रोचक होती हैं बल्कि पढ़ना–लिखना सीखने में भी बहुत सहायक होती हैं। श्रवण और पठन कौशल के विकास में **कविता** आश्चर्यजनक योगदान करती है। बच्चे कविताओं का भरपूर आनंद ले सकें इसके लिए उन्हें अपने चारों ओर बिठाएँ और किताब को बीच में रखें। दो–तीन बार पढ़ने के बाद आप किताब के बगैर कविता गाकर सुनाएँ और बच्चे आपके साथ गाएँ। जल्दी ही वे कविता को याद कर लेंगे और गा भी सकेंगे।
- कहानियाँ बच्चों की कल्पना को नयी उड़ान देकर एक निराली दुनिया में ले जाती हैं जिसमें जाने के लिए बच्चे आतुर रहते हैं। दादा–दादी के मुख से सुनी गई कहानियाँ बच्चों को लम्बे समय तक याद रहती हैं और वे अपनी कल्पनाओं के आधार पर ही एक नए संसार का सृजन कर लेते हैं।
- बच्चों की रुचि को दृष्टिगत रखकर बनाई गई गतिविधियाँ तथा अभ्यास इस पुस्तक में भरपूर मात्रा में दिए गए हैं। इनके माध्यम से कुछ करके सीखने का भरपूर अवसर बच्चों को मिलेगा। जिससे बच्चे भाषा का इस्तेमाल सिर्फ़ पढ़ने–लिखने और बोलने के लिए ही नहीं बल्कि तर्क करने, विश्लेषण करने, अनुमान लगाने, अपनी भावनाओं और सोच को अभिव्यक्त करने और कल्पना करने आदि के लिए भी करेंगे।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 सुझाव देती है कि पहली और दूसरी कक्षा में भाषा और गणित के ही माध्यम से कला शिक्षण किया जाए। इसी को दृष्टिगत रखते हुए पुस्तक में विभिन्न कलाओं से संबंधित गतिविधियाँ दी गई हैं। सांस्कृतिक विविधताओं को भी पुस्तक में स्थान दिया गया है। किताब में वरली (महाराष्ट्र) मधुबनी (बिहार) तथा गोंडी भित्ती (मध्य प्रदेश) शैली के चित्र दिए गए हैं ताकि बचपन से ही बच्चे विभिन्न लोकशैलियों से परिचित हो सकें। हमारा देश लोककथा एवं लोकगीतों से समृद्ध है। इस

किताब में 'दोस्त की मदद' (मलयालम लोककथा) तथा 'टेसू राजा बीच बाज़ार' (लोकगीत) दिए गए हैं। विभिन्न वाद्य यंत्रों की जानकारी भी बच्चों को दी गई है।

- **रिमझिम-2** रंगीन आकर्षक चित्रों से सजी है। चित्र पुस्तक को आकर्षक बनाने के साथ अनेक भाषायी कौशल विकसित करने में सहायक हो सकते हैं। शिक्षक बच्चों को अपने पास बैठाकर चित्र दिखाएँ और उनसे बातचीत करें। यह बातचीत बच्चों को आनंदित करने के साथ ही साथ उनसे संवाद स्थापित करने का भी प्रयास है। चित्रों पर चर्चा बच्चों में भाषायी कौशलों के साथ अवलोकन आदि कौशल भी विकसित करेगी।
- किताब में दिया पाठ **कौन अधिक बलवान** अंग्रेज़ी की दूसरी कक्षा की किताब **Marigold-Book Two** में भी दिया गया है। इसके पीछे धारणा यही है कि हिंदी में पाठ पढ़ने के बाद बच्चा अंग्रेज़ी में पढ़ेगा तो सहजता से पाठ समझ लेगा। शिक्षक को यह बात ध्यान में रखनी होगी कि शिक्षण योजना इस प्रकार बनाए कि बच्चा हिंदी में पाठ पहले पढ़े बाद में अंग्रेजी में। पहली कक्षा की किताब में **सुहानी** बिल्ली ने अपनी मज़ेदार बातों से बच्चों को गुदगुदाया था। नटखट सुहानी की याद बच्चों को फिर से दिलाने के लिए सुहानी से संबंधित अभ्यास भी दिया गया है।
- अभ्यास तथा गतिविधियाँ करवाते समय शारीरिक रूप से चुनौती वाले बच्चों को विशेष रूप से ध्यान में रखें। जैसे- पृष्ठ-35 में एक प्रश्न है–

  खूब तेज़ बारिश होगी तो तुम्हारे आस-पास कैसा दिखाई देगा?

  यदि कक्षा में कोई ऐसा बच्चा है जिसे ठीक से दिखाई नहीं देता तो उससे यह सवाल पूछा जा सकता है–

  बरसात होने पर कैसी आवाज़ें सुनाई पड़ती हैं?

  इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखें कि प्रत्येक अभ्यास तथा गतिविधियाँ ऐसी हों जिनमें कक्षा का प्रत्येक बच्चा भाग ले सके।

2021-22

किताब में आए चिह्न

तुम्हें किताब में जगह-जगह ये चिह्न दिखाई देंगे। इनका मतलब यहाँ दिया गया है।

लिखो

खेल

सिर्फ़ पढ़ने के लिए

ढूँढ़ो और लिखो

बनाओ

तुम्हारी कल्पना से

करो

खोजो

बातचीत के लिए

NBCampus